अहंकार की कीमत

–गॉडफ्राइड क्वाओ

''जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें'' (रोमियों 15:4)। बाइबल की कहानियों में सब लोगों के लिए महत्वपूर्ण सबक हैं परन्तु खास करके मसीही लोगों के लिए। अहंकार को मनुष्य की सबसे बड़ी समस्याओं में एक बताया गया है। परमेश्वर ने अंहकारी लोगों को दण्डित किया है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

1. यहूदा का राजा उजिय्याह 2 इतिहास 26. सौलह वर्ष की उम्र में वह राजा बन गया था। अपने धार्मिक सलाहकार जकर्याह की योग्य अगुआई में उसने समझदारी से शासन किया और वह परमेश्वर को बहुत भाता था। उसने अपने सृजनहार की वफ़ादारी से सेवा की और बदले में उसने उसकी ओर से बहुत सी आशिषें प्राप्त कीं। *''उसकी कीर्त्ति दूर दूर तक फैल गई, क्योंकि उसे अदभुत सहायता यहां तक मिली कि वह सामर्थी हो गया''* (2 इतिहास 26:15)।

फिर, अचानक! उसका पतन हो गया। उसकी प्रसिद्धि और यश अहंकार में बदल गया। उसने अपने प्रभु का अनादर किया क्योंकि उसने धूप की वेदी पर धूप जलाना चाहा (आयत 16)। उसे 81 याजकों द्वारा रोका गया, अजरिया और 80 अन्यों के द्वारा। वह याजकों के काम को खुद करना चाहता था यानी ऐसा काम जो हारून के वंश के याजकों के जिम्मे था।

दण्ड:

परमेश्वर की आशिषें वापस ले ली गईं (आयत 18)। उसके माथे पर भयानक कोढ़ निकल आया, जिससे वह जीवन भर के लिए सांस्कारिक रूप में अशुद्ध हो गया।

उसे राजाओं की कब्रों में दफ़नाया नहीं गया (आयत 23)।

2. बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर (दानिय्येल 4)। नबूकदनेसर के दूसरे स्वप्न में जिसका उल्लेख दानिय्येल 4 अध्याय में है कि किस प्रकार थोड़ी देर के लिए उसकी शान जाती रहेगी। अनादि परमेश्वर ने उसे शान, शक्ति और समृद्धि दी थी। परन्तु वह इतना घमण्डी हो गया कि उसने प्रतापी परमेश्वर की शक्ति को नहीं माना। क्योंकि उसने कहा था, *''क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है, जिसे मैं ही ने अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिये बसाया है?''* (दानिय्येल 4:30)। अंहकार से भरे उसके बोल के पूरा होने से पहले ही एक स्वर्गीय वाणी ने उसे जंगल में सात साल तक जंगली जानवरों के साथ रहने की सज़ा सुना दी (आयतें 31, 32)।

दण्ड:

मानवीय समाज से बनवास पूरी बदनामी– किसी राजा के अपनी होश खोकर जंगली जानवर की तरह व्यवहार करने से बढ़कर अपमानजनक बात नहीं है।

3. **गोलियत** (1 शमूएल 3:16)। गोलियत ने बड़ी शेखी से दाऊद को ललकारा था, *''मैं तेरा मांस आकाश के पक्षियों और वनपशुओं को दे दूंगा''* (आयत 44)। गोलियत ने जो मनुष्य के रूप में दानव था दाऊद को कम आंका था। उसने और उस लड़के में लड़ाई में कोई बराबरी नहीं थी। दाऊद गोलियत का सिर ट्रॉफ़ी के रूप में घर ले गया (लूका 18:9, 14 भी पढ़ें)।

सारांश

यह ध्यान देना आवश्यक है कि सब भौतिक आशिषें सृजनहार की ओर से मिलती हैं। वह उन्हें जब चाहे वापस ले सकता है। अहंकार की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है। इससे बचें। अहंकारी मसीही अपनी पहले वाली स्थिति को फिर से प्राप्त कर सकता/सकती है यदि वह अपने आपको नम्र कर दे। ✠

जय पाने वाले मसीही

–डेविड डैफनबॉ

अगर आपसे अच्छे मसीही जीवन के आवश्यक गुणों और खूबियों की सूची को बनाने के लिए कहा जाए तो आप किन शब्दों का चयन करेंगे। निश्चय ही विश्वास, भलाई, दयालुता और करूणा और सहनशीलता जैसे शब्दों को शामिल करना चाहेंगे। हम आत्मा के फल (गलातियों 5:22, 23) या मसीही अनुग्रहों (2 पतरस 1:5–7) या कुलुस्सियों 3:12 से आगे बताई गई पौलुस की अनाम सूची में से किसी को छोड़ना नहीं चाहेंगे।

परन्तु हम में से कितने लोग उस सूची में ''जय पाने वाले'' शब्द को जोड़ना चाहेंगे? हां, जय पाने वाले ही। एशिया माइनर की कलीसियाओं के नाम सातों पत्रों में (प्रकाशितवाक्य 2 और 3) यीशु एक वचन देता है। हर कलीसिया की कितनी भी प्रशंसा या आलोचना करे पर पत्र का अंत वह एक वचन देकर करता है, उन लोगों को जो जय पाने वाले हैं।

क्या हम जय पाने वाले होंगे? हम अपने जीवनों के संघर्षों तथा समस्याओं को जवाब के रूप में जय पाने पर हिचकिचाते हैं। जय पाना कोई आसान नहीं है। जय पाने के लिए बहुत ज़ोर लगाना पड़ता है परन्तु इससे आशिषें भी बहुत मिलती हैं। बहुत बार हम अपनी समस्याओं और परेशानियों का आसान हल चाहते हैं (हम आम तौर पर परमेश्वर से उन्हें हमारे जीवनों में से निकाल देने या फिर हमारी रक्षा करने को कहते हैं) और इस कारण हम आम तौर पर परमेश्वर की सबसे बड़ी आशिषों को खो देते हैं।

यह पता चलने पर कि भीड़ आ पहुंची है यीशु के बाग में से रात को चुपके से निकल जाने पर उस पर कौन आरोप लगा सकता था? पौलुस के खतरनाक पहली मिशनरी यात्रा के बाद तरसुस से चुपके से निकल जाने पर उस पर कौन आरोप लगा सकता था? परमेश्वर ने यीशु और पौलुस को जय पाने वाले बनने के लिए सामर्थ दी और वह हमें भी वही सामर्थ देगा; न केवल जय पाने की सामर्थ बल्कि वह आशीष भी जिसका उसने वचन दिया है।

उन सातों कलीसियाओं को जिन्हें झूठे शिक्षकों, झूठे नबियों, अनैतिकता, बेपरवाही, क्लेश, सताव (यहां तक कि मृत्यु) और पता नहीं और क्या क्या सहने पड़े थे, उनकी सबसे बड़ी आवश्यकता जय पाना था। समझौता, कर लेना, नज़रअंदाज करना और ध्यान न देना, अपनी बात पर दृढ़ न रहना ये सब बातें उनका काम आसान कर सकती थीं परन्तु प्रतिज्ञा केवल जय पाने वाले के लिए थी। आशीष जय पाने के लिए ही है।

''क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है'' (1 यहन्ना 5:4)। ✠

स्त्री की भूमिका पुस्तक में से

क्या स्त्री उपदेश दे सकती है?

–बेटी बर्टन चोट

यदि प्रश्न यह है कि ''मिले जुले व्यस्क लोगों की सभा में उपदेश दे सकती है?'' तो उत्तर होगा, नहीं। 1 कुरिन्थियों 14:34–35 तथा 1 तीमुथियुस 2:12–14 में वचन स्त्री को कलीसिया की सभा में पुरुषों पर आज्ञा देने से रोकता है। *''मैं कहता हूं कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे''* (1 कुरिन्थियों 14:35)।

''उपदेश करने'' से अभिप्राय है मण्डली में भाषण देना। हम सभी अपने सामान्य जीवन में प्रतिदिन कुछ न कुछ उपदेश देते हैं।

हम अपने व्यवहार तथा दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों के द्वारा भी उपदेश देते हैं। युवा प्रचारक तीतुस को पौलुस ने लिखा कि स्त्रियां अपने व्यवहार में समझदार और पवित्र हों, ताकि *''परमेश्वर के वचन की निंदा न होने पाए''* (तीतुस 2:5)। तीमुथियुस को उसने जवान विधवाओं के लिए निर्देश दिए कि उनके चाल–चलन ऐसे हों जिससे *''किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न''* मिले (1 तीमुथियुस 5:14)। इन निर्देशों से स्पष्ट होता है कि हम सब अपने जीवन के उदाहरण देकर अच्छी शिक्षा देकर या फिर परमेश्वर के वचन या उसके लोगों के लिए बदनामी या निंदा का कारण बनकर, उपदेश देते हैं।

विचार करने की बात

इस संसार में हम अकेले नहीं रहते हैं। जो कुछ भी हम करते हैं उसे दूसरे लोग देखते हैं और उन पर इसका कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता है। अपने आपको ''मसीह जैसे'' कहलाकर उसके जैसा जीवन न बिताकर हम लोगों को मसीहियत से दूर कर देते हैं। रोमियों 2:14 की यह भविष्यवाणी सटीक बैठती है, *''क्योंकि तुम्हारे कारण अन्यजातियों में परमेश्वर के नाम की निंदा की जाती है।''*

स्त्रियां प्रतिदिन अपने घर की चारदिवारी में उपदेश देती रहती हैं। यह जानते हुए कि मसीही स्त्रियों के विवाह अविश्वासी पुरुषों के साथ हुए थे, पतरस ने निर्देश दिया: *''हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के आधीन रहो। इसलिए कि यदि इन में से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल–चलन को देखकर बिना वचन के अपनी अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा खिंच जाएं''* (1 पतरस 3:1, 2)।

जहां कहीं केवल पत्नी ही मसीही है, परन्तु पति नहीं, तो वहां पति के उद्धार की उम्मीद केवल उसकी पत्नी के विश्वासी होने के कारण है। यदि पत्नी अपने मसीही जीवन के सम्बन्ध में दुविधा में है, आराधना में कभी कभी जाती है और अपनी आत्मिक उन्नति के लिए या दूसरों को सिखाने की उसे परवाह नहीं है तो वह अपने पति के लिए रुकावट का कारण बन सकती है। उसका अपना व्यवहार भी अपने पति को सुसमाचार की सच्चाई को मानने से रोक सकता है। परन्तु यदि वह स्नेहपूर्वक और आदरपूर्वक इस बात पर ज़ोर दे कि उसके जीवन में पहल परमेश्वर को मिलनी चाहिए तो उसका पति और उसके परिवार के अन्य लोग भी उसके धार्मिक व्यवहार से सीख लेंगे।

विचार करने वाली बात

एक बुजुर्ग दम्पत्ति की कहानी है। दोनों मसीही नहीं थे। पति रौबदार था जबकि पत्नी विनम्र और शालीन स्वभाव की थी। उसने सच्चाई को जानकर सुसमाचार का आज्ञा पालन करना चाहा। पति उस पर भड़क गया कि अगर उसने बपतिस्मा लिया तो वह उसे तलाक दे देगा। साथ ही उसने वादा भी किया कि वह आप कभी भी बपतिस्मा नहीं लेगा।

अन्त में पत्नी ने अपने पति के बजाय परमेश्वर की आज्ञा मानने की हिम्मत जुटा ली। पहले पहल बहुत हो हल्ला और शोर शराबा करने के बावजूद, साल के अन्दर अन्दर पति का कठोर मन भी पिघल गया और वह मसीही बन गया! सच में, उसकी एकमात्र आशा अपनी पत्नी में थी। यदि वह हिम्मत जुटाकर अपने विश्वास की बात न मानती तो, तो उसके पति को आज्ञा मानने वाला कोमल मन नहीं मिलना था।

घरों में जो शिक्षा बच्चों को दी जाती है उसमें से अधिकतर शिक्षा स्त्रियों की ओर से ही होती है। जवान प्रचारक तीमुथियुस के विषय में हम पढ़ते हैं, ''*और मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहिले तेरी नानी लोईस, और तेरी माता यूनीके में थी, और मुझे निश्चय है, कि तुझ में भी है*'' (2 तीमुथियुस 1:5)। तीमुथियुस का पिता एक अन्यजाति था, उसे पुराने नियम के पवित्र शास्त्र वाला विश्वास नहीं था, जो मसीह पर विश्वास करने का आधार है। तीमुथियुस की माता और नानी ने उसे परमेश्वर के वचन की सच्चाई बड़ी सावधानी से बचपन में ही दे दी थी।

परमेश्वर के वचन में स्त्रियों के सिखाने के उदाहरण मिलते हैं जिन से पता चलता है कि वे हर समय अपने व्यवहार के द्वारा और घर में सिखाने के लिए स्वतन्त्र थीं। परन्तु क्या स्त्री उन्हें भी सिखा सकती है जो उसके

परिवार के लोग न हो?

प्रेरितों 18:2, 25, 26 में हम अकविल्ला नामक एक आदमी और उसकी पत्नी प्रिसकिल्ला के बारे में पढ़ते हैं। वे यहूदी पृष्ठभूमि वाले लोग थे और तम्बू बनाने का काम करते थे और कुरिन्थुस में रहते थे। जब पौलुस कुरिन्थुस में था तो वह उन्हीं के पास रूका था। प्रिसकिल्ला और अकविल्ला पहले ही मसीही बन चुके थे या उन्हें पौलुस मसीह में लेकर आया था, इस पर वचन कुछ नहीं है। परन्तु जब पौलुस कुरिन्थुस से गया तो यह दम्पत्ति इफिसुस तक उसके साथ था। वहां उन्हें अपुलोस नामक एक यहूदी मिला जो, *''विद्वान पुरुष और पवित्र शास्त्र को अच्छी तरह से जानता था''* (आयत 24)। *''पर प्रिसकिल्ला और अकविल्ला उसे अपने यहां ले गए और उसे परमेश्वर का मार्ग और भी ठीक ठीक बताया''* (आयत 26)। वचन से पता चलता है कि अपुलोस को सिखाने में अकविल्ला की पत्नी ने साझा प्रयास किया था। निश्चय ही यह सिखाना कलीसिया के सभास्थल में या आराधनालय में नहीं हुआ होगा। बल्कि वे उसे अपने साथ ले गए और घर में उसे अकेले को समझाया। कई जगहों पर घरों में बाइबल की बात करने के मामले मिलते हैं जहां सिखाने में योगदान देना स्त्री के लिए अच्छा है। इस परिस्थिति में उसका व्यवहार और आचरण बिल्कुल एक मसीही व्यक्ति वाला यानी प्रेमपूर्वक और विनम्रता वाला होना आवश्यक है, ऐसा नहीं होना चाहिए कि वह ऐसे जताए जैसे वह ''सब कुछ जानती है और न ही क्रोध से भरी हो।

आज के युग में जब बहुत सी पुस्तकें छपी हुई मिल जाती हैं तो कई बार यह प्रश्न खड़ा होता है कि क्या पुरुष के लिए किसी स्त्री की लिखी पुस्तक या लेख को पढ़ना गलत बात है?'' यह भी घर में एक व्यक्तिगत अध्ययन के जैसा ही है, अन्तर केवल इतना है कि इसमें लिखे शब्द मुंह के द्वारा बोलने के बजाय छपे हुए होते हैं। इसमें मण्डली में प्रचार करने जैसी कोई बात नहीं है क्योंकि पुरुष को यह स्वतन्त्रता है कि वह इन बातों को चाहे तो पढ़े और चाहे तो न, फिर जिस स्त्री का लेख वह पढ़ा रहा है उस पर कोई दबाव नहीं होगा कि वह उसकी अगुआई को माने।

क्या स्त्रियां किसी अवसर पर मण्डली में उपदेश दे सकती हैं? बूढ़ी स्त्रियों के लिए पौलुस ने तीतुस को निर्देश दिए कि *''वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि वे अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें और संयमी पतिव्रता और घर का कारबार करने वाली, भली और अपने अपने पति के अधीन रहने वाली हों ...''* (तीतुस 2:3–5)। सो इस बात की केवल

अनुमति ही नहीं बल्कि आज्ञा है कि स्त्रियां अन्य स्त्रियों को और बच्चों को सिखाएं। ऐसा व्यक्तिगत रूप में घरों में, मण्डली में, छोटे समूहों में, बड़े समूहों में, सैमिनारों में और 'वर्कशापों में' कहीं भी हो सकता है जहां पुरुष न हों।

यह भी हो सकता है कि कहीं छोटी मण्डलियां हों जिसमें केवल स्त्रियां ही हों। ऐसी परिस्थिति में क्या किया जाए? क्या उन्हें आराधना करना इसलिए छोड़ देना चाहिए क्योंकि अगुआई करने के लिए उनमें कोई पुरुष नहीं है? नहीं; यदि मण्डली के सभी सदस्य स्त्रियां हैं तो जब तक वहां कोई पुरुष मसीही नहीं होता तब तक आराधना करवाने की जिम्मेदारी उन्हीं की होगी है।

सो प्रश्न यह नहीं है कि ''क्या स्त्री उपदेश दे सकती है?'', बल्कि प्रश्न फिर से नेतृत्व की भूमिका का है। पुरुषों की सभा में स्त्री को उपदेश देने की आज्ञा नहीं है। मिली जुली सभा में जिसमें पुरुष और स्त्रियां दोनों हों, वहां उपदेश देने के साथ साथ आराधना की अन्य गतिविधियों में हर बात में अगुआई का काम पुरुषों का है। यह उन्हें परमेश्वर द्वारा दी गई जिम्मेदारी है, और जब वे उस काम को स्त्रियों को सौंप देते हैं, चाहे वह कितनी भी ''गुणी'' क्यों न हो, तो वे परमेश्वर ही की आज्ञा को तोड़ रहे होते हैं।

बच्चों, अन्य स्त्रियों, अविश्वासियों को उपदेश देने का काम सचमुच में बड़ा है और इसके लिए समय चाहिए। यदि स्त्रियां इस काम को बखूबी करती हैं तो बहुत से लोग अनन्तकाल में परमेश्वर के साथ रह रहे होंगे जो ऐसा न होने पर नाश हो जाते। हमें इस बहस को छोड़कर कि वे क्या *नहीं कर सकतीं,* यह ध्यान देना चाहिए कि वे क्या कर सकती हैं। ✠

पेज 39 का शेष

निराश पिता अपने पुत्र को यीशु के पास ले आया। वह पुकारने लगा, ''हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर।'' यीशु ने उस लड़के को चंगा कर दिया और अपने चेलों को उनके विश्वास की कमी के कारण डांट लगाई।

क्या यह हो सकता है कि पतरस, याकूब और यूहन्ना यीशु के साथ पहाड़ पर इसलिए गए थे कि उनका विश्वास बढ़े? काम तराई में है, परन्तु काम करने का विश्वास और सामर्थ प्रार्थना और परमेश्वर के वचनों को सुनने वाले पहाड़ की चोटी पर ही मिलता है। ✠

सतुंष्टि

–रॉयस फ्रेडरिक

''जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए। जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं'' (फिलिप्पियों 4:12, 13)।

प्रेरित पौलुस रोम की जेल में कैद था जब उसने इन शब्दों को लिखा। यदि रोमी सरकार के शासन में एक कैदी पहली सदी में संतुष्ट हो सकता था तो, हम लोग जो 21वीं सदी में प्रजातंत्रिक सरकार के शासन में स्वतन्त्र होकर रहते हैं, उससे बढ़कर संतुष्ट क्यों नहीं हो सकते?

कुछ लोग **अपनी सारी लालसाओं के साथ संतुष्टि** को उलझा देते हैं उन्हें लगता है कि जब उनकी सभी लालसाएं पूरी हो जाएंगी तो वे संतुष्ट हो जाएंगे, जिस कारण वे हवा को पकड़ने की कोशिश करते हैं। उन्हें यह सीधी सी बात समझ में नहीं आती कि जब हम अपनी लालसाओं को पूरा करने की कोशिश करते हैं तो घटने के बजाय ये बढ़ती ही हैं। एक भूस्वामी के शब्दों में, ''मेरी लालसाएं असल में बहुत सीधी हैं। मेरी केवल इतनी इच्छा है कि मुझे अपनी जमीन के साथ लगती जमीन मिल जाए।'' बहुत कोशिश करने पर अपनी लालसाओं को तृप्त करने की ठान लेने वाला व्यक्ति बहुत कम संतुष्ट हो पाता है।

पौलुस ने ऐसी संतुष्टि की बात नहीं कही है।

कुछ लोग संतुष्टि को **जीवन की घटनाओं के प्रति पूरी तरह से उदासीन होने** से उलझा देते हैं। प्राचीन यूनान के स्तोइकी लोगों का मानना था कि सचमुच में परिपक्व व्यक्ति को कभी सुख या दुख से कोई फर्क नहीं पड़ता। पौलुस इस प्रकार के रवइये की बात नहीं कर रहा हो सकता। क्योंकि वह अपने आंसुओं और आनन्द की बात खुलेआम करता है (2 कुरिन्थियों 2:3, 4)। पत्थर–दिल होना परिपक्वता की निशानी नहीं है। पाप और शोक, धार्मिकता और आनन्द मसीही व्यक्ति के हृदय को छू लेते हैं। संतुष्टि उदासीनता जैसी नहीं है।

बाइबली संतुष्टि **दीन, मसीह पर बिना किसी रूकावट के निर्भर होना** है, जीवन में चाहे जो भी क्यों न हो जाए है। यह एक ऐसा रवैया है जिसमें किस्मत या बदकिस्मती हिला नहीं सकती। यह इस बात को मान लेना है कि परमेश्वर जो चाहे हमारे जीवन में कर सकता है। जैसा कि किसी ने कहा है: ''संतुष्ट व्यक्ति वह है जो चक्क्रदार रास्ते के साथ प्राकृति दृश्यों का आनंद लेता है।''

जब तू छोटा था और मेरी बाहों में आ जाता था
तब मैं तुझे रात की ठण्डी हवा से कम्बल से ढांप लेता था;
पर अब तू बड़ा हो गया है और मेरी बाहों में नहीं आता
मैं अपने हाथ फैलाकर तुझे अपनी प्रार्थनाओं से ढांप लेता हूं।

हे प्रभु मेरे जीवन को अपनी खिड़की बना ले
जिसमें से दूसरों को रोशनी मिल सके,
और मुझे दर्पण बना दे
कि मुझ से मिलने वाले लोग मुझ में तेरे प्रेम को देख सकें।

नफ़रत तेज़ाब की तरह है। जिस चीज़ पर डाली जाती है
उसको नष्ट कर देती है,
पर उस बर्तन को भी खराब कर सकती है
जिसमें इसे रखा जाता है।

परमेश्वर के विशेष लोग

(1 पतरस 2:9; तीतुस 2:14)

-डॉन एल. नॉर्वुड

जब कोई जिम्मेदार व्यक्ति आत्मिक रूप में नया जन्म ले लेता है (यूहन्ना 3:3, 5) तो वह परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में एक विशेष व्यक्ति बन जाता है (1 पतरस 2:9–11)। वह उसी समय, परमेश्वर की आत्मिक संतान यानी अनन्त जीवन का वारिस बन जाता/जाती है (गलातियों 3:26–29)। देह की कमज़ोरी के कारण हर मानवीय जीव में पाप करने की स्वाभाविक प्रवृति पाई जाती है, इस कारण परमेश्वर ने वे साधन उपलब्ध करवाए हैं जिनमें परमेश्वर की संतान इन पापपूर्ण आवेशों तथा कामनाओं के नियन्त्रण से बाहर जीवन बिता सकती है। इन वचनों में, नया जन्म लेने के बाद भी मनुष्य की अवस्था को दिखाया गया है – (रोमियों 7:14–25; 8:1; गलातियों 5:16–18, 22–25; रोमियों 8:5, 6, 14)। सब लोगों की पाप करने की यही प्रवृति है (इफिसियों 2:1–3; रोमियों 3:23)।

पाप पर हमारी विजय पक्की है यदि हम विश्वास से चलते हैं। आत्मा के निर्देशों यानी नये नियमों के द्वारा चलते हैं (1 यूहन्ना 5:4; 2 पतरस 1:3, 4)।

परमेश्वर की आत्मिक संतान हर समय परमेश्वर की करूणा और उसके अनुग्रह के अधीन है (1 पतरस 2:9, 10)। ऐसे व्यक्ति के विश्वास (यानी विश्वास से उसके आज्ञा मानने) ने उसे परमेश्वर के अनुग्रह तक पहुंचाया है और इस कारण परमेश्वर और उसके आज्ञाकारी बालक के बीच सुलह या शांति हो गई है (रोमियों 5:1–5)।

परमेश्वर के अनुग्रह ने मसीह में इस पश्चात्तापी विश्वासी को उद्धार दिलाया है (तीतुस 2:11–14) और अब उसे आत्मा के वचन के द्वारा अभक्ति और सांसारिक वासनाओं का इनकार करके गंभीरता, धार्मिकता और भक्तिपूर्वक इस संसार में रहना सिखाया जा रहा है। ऐसे व्यक्ति को भले कामों के लिए सरगर्म रहना चाहिए जो प्रभु द्वारा उसके वचन में दिए गए हैं (इफिसियों 2:8–10)।

परमेश्वर के आत्मिक बालक को यीशु मसीह के द्वारा उसके अनुग्रह के सिंहासन तक पहुंच दी गई है (1 तीमुथियुस 2:5; इब्रानियों 4:14–16)। यह बड़ा सौभाग्य किसी और को प्राप्त नहीं है। एक अवसर पर उस आदमी ने जिसे यीशु ने चंगा किया था, कहा था, *''हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता, परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो और उसकी इच्छा पर चलता है तो वह उसकी सुनता है''* (यूहन्ना 9:31)। प्रेरितों 10:1–4 में कुरनेलियुस इसका एक उदाहरण है। 1 यूहन्ना 5:14, 15 भी पढ़ें।

जहां तक भौतिक आवश्यकताओं की बात है, परमेश्वर की आत्मिक संतान को उनकी चिंता नहीं करनी चाहिए या उनके लिए अधिक परेशान नहीं होना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर ने यह सशर्त प्रतिज्ञा की है (मत्ती 6:33; इब्रानियों 13:5, 6)।

परमेश्वर का कोई बालक जब पाप करता है तो वह इससे मन फिरा सकता है, इसे मान सकता है, और क्षमा के लिए प्रार्थना कर सकता है और परमेश्वर ने क्षमा करने का वायदा किया है (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9; याकूब 5:16–20)।

मसीही लोगों से भाइयों (आत्मिक भाइयों) से प्रेम करने की बात कहने में परमेश्वर का कोई उद्देश्य है (1 पतरस 2:17; 2 पतरस 1:7, 8)। मसीही लोगों के लिए सब लोगों के साथ भला करना आवश्यक है, परन्तु विशेष करके अपने मसीही भाइयों के साथ (गलातियों 6:10)।

क्या आप परमेश्वर के विशेष लोगों में से हैं? परमेश्वर आपको विशेष लोग बनाना चाहता है (1 तीमुथियुस 2:1–6)। ✞

परमेश्वर का वरदान

–गैरी सी. हैम्टन

बच्चों के पालन पोषण का सचमुच में प्रभावशाली काम मिलने से पहले व्यक्ति के लिए यह समझना आवश्यक है कि वे परमेश्वर की ओर से विशेष गिफ्ट हैं। भजन लिखने वाले ने गाया, *''देखो, लड़के यहोवा के दिए हुए भाग हैं, गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है। जैसे वीर के हाथ में तीर, वैसे ही जवानी के लड़के होते हैं। क्या ही धन्य है वह पुरुष जिसने अपने तर्कश को उनसे भर लिया हो! वह फाटक के पास शत्रुओं से बातें करते संकोच न करेगा''* (भजन संहिता 127:3–5)।

बच्चे परमेश्वर की ओर से हैं, इस कारण माता पिता के रूप में हमें उन्हें अपने स्वरूप में ढालने की कोशिश नहीं करनी चाहिए या उनके जीवनों में अपनी योजना डालने के लिए दबाव नहीं डालना चाहिए। इसके बजाय हमें वह याद रखना आवश्यक है जो मूसा ने मनुष्य की सृष्टि के विषय में लिखा था। *''तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की''* (उत्पत्ति 1:27)।

हर बालक से प्रेम किया जाना आवश्यक है और उसे यह पता होना आवश्यक है कि वह जैसा भी है उसी हाल में मूल्यवान है। जब तक उसका जीवन प्रभु की इच्छा के अनुसार है उसे किसी विशेष जीवन के काम को चुनने या अपने जीवन के काम के लिए या किसी मनुष्य की योजना को मानने से इनकार करने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए।

जब हिज़किय्याह को यशायाह द्वारा यह बताया गया कि परमेश्वर ने कहा है कि वह मरने को है तो राजा ने परमेश्वर से प्रार्थना की कि

वह याद करे कि उसका जीवन कैसा था और उसे और जीने का मौका दे। परमेश्वर ने उसका प्राण बख्श दिया और राजा ने धन्यवाद व्यक्त करते हुए एक कविता लिखी। उस कविता में उसने संकेत दिया कि वह अपने जीवन का इस्तेमाल परमेश्वर की महिमा के लिए करेगा और कहा, *''पिता तेरी सच्चाई का समाचार पुत्रों को देता है''* (यशायाह 38:19)।

यदि हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं तो यह जानते हुए कि हमारे बच्चे हमें परमेश्वर की ओर से मिले हुए हैं, हम सबसे पहले उन्हें परमेश्वर की सच्चाई बताएंगे। हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि *''प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनका पालन पोषण''* करें (इफिसियों 6:4)। हमारे घरों में परमेश्वर का वचन दीपक का काम करना चाहिए (भजन 119:105)। ✠

परमेश्वर ने बीते युगों में अपने आपको अपने उद्देश्यों को कैसे दिखाया?

बीते समय के पवित्र पुरुषों के द्वारा जो विश्वास में मजबूत थे।

1. ''भक्तजन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे'' (2 पतरस 1:21)।''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें'' कीं (इब्रानियों 1:1, 2)।
2. पुरखाओं के द्वारा उसने अपने खुद में वजूद होने, एकता, व्यक्तित्व और मुहैया करवाने को प्रकट किया और उनके द्वारा उसने विश्वास के स्रोत, प्रकृति और प्रमाणों और प्रतिफलों को भी दिखाया, हाबिल, हनोक, नूह, अब्राहम, इसहाक, याकूब और यूसुफ (देखें इब्रानियों 11)।
3. मूसा और इब्रानी कौम के आरम्भिक अगुओं के द्वारा उसने अपने निरालेपन, अपने श्रेष्ठ होने और अपने सर्वशक्तिमान होने को दिखाया। मूसा के द्वारा किए गए चमत्कार को मुक्य तौर पर बनावटी मूर्तियों के देवी देवताओं के ऊपर परमेश्वर की सामर्थ, श्रेष्ठता को दिखाने के लिए थे। मूसा के द्वारा उसने दस आज्ञाओं में सही और गलत के अनन्त नियमों को भी दिखाया (देखें निर्गमन 20)।
4. इब्रानी नबियों के द्वारा उसने अपनी समझ, सच्चाई और न्याय और पवित्रता को दिखाया और अपने मसीहा के उद्देश्यों और योजनाओं को भी। यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल, दानिय्येल, होशे, आमोस आदि नबी निजी पवित्रता, जातीय धार्मिकता और सामाजिक न्याय की व्याख्या करने वाले लोग थे।

प्रेम की छुड़ाने वाली सामर्थ

–जैरिल (पोली) क्लाइन

यदि आपकी क्रियाएं और प्रतिक्रियाएं इस बात से तय होती हैं कि उस समय आपके साथ कैसा व्यवहार किया जा रहा है, यदि किसी दूसरे का मिज़ाज आपके मिज़ाज को चलाता है, तो आप सबसे डांवाडोल वातावरण में रहते हैं। शरीर की सनकों से कभी इधर और कभी उधर ले डोलने वाला जीवन निराश करने वाला और अपमानजनक है। अपने मन और आत्मा और इच्छा को किसी दूसरे के वश में कर देने का अर्थ गुलाम हो जाना है। और बेशक हम में से कोई जानबूझकर ऐसा करना नहीं चुनता है पर फिर भी हम में से हर कोई ऐसी स्थिति में से गुज़रता ही है।

इसी कारण परमेश्वर ने एक बिल्कुल नये शब्द *agapao* (अगापाओ) का इस्तेमाल किया। अपने प्रेम की किस्म के वर्णन के लिए जो कि छुड़ाने वाला प्रेम है, किसी भी बाहरी प्रभाव से रहित है, उसकी इच्छा पर निर्भर है, अपने ही स्वभाव की विचारपूर्वक व्यक्ति के रूप में चुना न कि किसी दूसरे के।

उसके द्वारा प्रेम किए जाने वालों के लिए आवश्यक नहीं कि वे इसके योग्य हों (रोमियों 5:8)। वास्तव में यदि उसके प्रेम की ऐसी कोई शर्त होती तो वह कभी प्रेम नहीं कर सकता था, क्योंकि हम में से कोई भी व्यक्ति उसके प्रेम के योग्य नहीं है। इसके बजाय यह प्रेम उनके जिनसे किया जाना है, किसी प्रकार से योग्य हुए बिना, इसके देने वाले की परिपक्वता पर आधारित है जो गहराई तक बहता और बहता ही जाता है (यूहन्ना 3:16)।

परमेश्वर का प्रेम आवेगशील, यानी कभी बढ़ने और कभी कम होने वाला नहीं है। यह प्रेम स्थिर दृढ़, स्थाई, टिकाऊ, अनादि है (1 कुरिन्थियों 13:13)। यह उस के जो इसे देता है, स्वभाव को दिखाता है (1 यूहन्ना 4:8, 16)।

जब हम उसके बन जाते हैं, तो हमें न केवल पापों की क्षमा प्राप्त होती

है बल्कि उसके पवित्र आत्मा का दान भी मिलता है (प्रेरितों 2:38, 39; 5:32)। अब वह हमारे भीतर वास करता है और हमें अपने स्वभाव या व्यक्तित्व, मिज़ाज, तबीयत से मेल खाने में सहायता करता है (यूहन्ना 14:32; रोमियों 8:29)। उसके बहुमूल्य और शानदार वायदों से हम उसके ईश्वरीय स्वभाव के भागीदार होते हैं (2 पतरस 1:4)।

अब हम अपने पुराने, स्वाभाविक आदत के अनुसार प्रेम नहीं करते। हमें उस पुराने स्वभाव को उतारने के लिए जिसने हमें गुलाम बनाया हुआ था और अपने पिता के स्वभाव को प्रशिक्षित और पुनः प्रशिक्षित किया जा रहा है (लूका 6:40; कुलुस्सियों 6:3)। अब हमें उसकी ओर से जो सक्षम है, सशक्त किया गया है (इफिसियों 3:14–21; 1 थिस्सलुनीकियों 5:23, 24; यहूदा 24:25; इब्रानियों 13:20, 21)। उसके आत्मा के द्वारा हम वैसे ही प्रेम करना सीख रहे हैं जैसे वह करता है (गलातियों 4:6, 7; इब्रानियों 5:13–25)।

हम लोगों को, जिन्हें मसीह यीशु में परमेश्वर के प्रेम के द्वारा छुड़ाया गया है, बिना शर्त के, स्वतन्त्र रूप में दूसरे हमारे लिए करते या नहीं करते हैं, उसे भुलाकर, प्रेम करने की छूट है (1 यूहन्ना 4:9–19)। सचमुच में इससे सब लोग जान जाएंगे कि हम उसके हैं जो प्रेम हैं (यूहन्ना 13:34, 35)।

परमेश्वर से अलग होकर हम इस प्रकार से प्रेम नहीं कर सकते हैं। इसी कारण यीशु ने अपने चेलों से उस में बने रहने को कहा था (यूहन्ना 15:1–12)।

जो लोग प्रेम के संसार के मानक के अनुसार क्रिया और प्रतिक्रिया करते हैं उनके लिए इस नये जीवन को, प्रेम करने के इस छुड़ाने वाले ढंग को समझ पाना असम्भव है (1 कुरिन्थियों 2:14)। परन्तु हम, जो कि प्रभु यीशु में हैं, न केवल इसे समझते हैं बल्कि इसमें रहते भी हैं (1 कुरिन्थियों 2:12; 3:23; 2 कुरिन्थियों 3:18; 4:7, 17, 18; 5:7, 9, 10; 9:8)।

''किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी'' (फिलिप्पियों 4:6, 7)।

अपने पुराने स्वभाव में से उत्तर देने की परीक्षा में पड़ने पर मुझे और आपको चाहिए कि हम उससे प्रार्थना करें जो प्रेम है और उसकी परिपक्वता में से लें। तभी और केवल तभी हम परमेश्वर की उस शांति को जान पाएंगे जो इस संसार की समझ से परे है।

पौलुस इन आयतों का लेखक था। जब उसने इन्हें लिखा उस समय वह जेल में था। उसने हर प्रकार के दुर्व्यवहार को सहा था (2 कुरिन्थियों 11:23–31)। फिर भी उसे इस बात की समझ थी कि असली आजादी इस संसार से बढ़कर है क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से मिलती है। और असली प्रेम, जो कि छुड़ाने वाला प्रेम है, परमेश्वर की ओर से ही मिलता है।

पवित्र आत्मा ने पौलुस को प्रेम का यह सबसे व्यावहारिक विवरण लिखने की प्रेरणा दी।

''प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है'' (1 कुरिन्थियों 13:4–7)

यह परमेश्वर का एक विवरण है। जहां प्रेम शब्द आया है उसकी जगह आप अपना नाम डाल सकते हैं और फि र देखें कि वह आपसे कितना प्रेम करता है। अब प्रेम की जगह अपना नाम डालें। क्या आप अपने पति या पत्नी के लिए ऐसा कर रहे हैं? वह चाहे जैसे जवाब दे, पर आप अपने पति या पत्नी से प्रेम करना जारी रखें और अपने आपको परमेश्वर के हाथ सौंप दें जो धर्मी और वफ़ादार है, जो आपको न छोड़ेगा न त्यागेगा (1 पतरस 2:8–24; 4:12–19)।

निराश न हों (गलातियों 6:9; 2 थिस्सलुनीकियों 3:13), क्योंकि परमेश्वर की करूणा जो आपको प्रेम के इस नये जीवन तक ले आई है, आपके साथी में भी वही काम कर सकती है (रोमियों 2 और 1 पतरस 3:1)। ✠

परमेश्वर ने अपने आपको और अपने उद्देश्यों को किसके द्वारा प्रकट किया?

अपने पुत्र यीशु मसीह और उसके प्रेरितों के द्वारा।

''इन अन्तिम दिनों में हमसे पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है'' (इब्रानियों 1:2)

बच्चों का पालन पोषण कैसे करें

इस संसार में बच्चों का पालन पोषण सम्भवतया सबसे कठिन काम है। हम सब बड़ी बुरी तरह से चाहते हैं कि हमारे बच्चे सही रास्ते पर चलें। मैं यह बिल्कुल दावा नहीं करता कि मेरे पास हर सवाल का जवाब है। सच्चाई तो यह है कि जैसे जैसे मैं बूढ़ा होता हूं वैसे वैसे मेरा ज्ञान कम हो जाता है। फिर भी इस लेख में मैं कुछ सुझाव देना चाहता हूं जिससे मुझे उम्मीद है कि हम सब को बच्चों का पालन पोषण करने में सहायता मिलेगी।

1. घर को जहां तक हो सके साफ़ सुथरा और बहुत आकर्षक बनाएं। जब बच्चे अच्छे, खुशनुमा माहौल में रहते हुए बड़े होते हैं तो उन्हें अच्छे, खुशहाल लोग बनने का बेहतरीन मौका मिलता है।

2. अपने बच्चों के साथ समय बिताएं। बहुत से बच्चे तो सचमुच में लगाव को तरसते रहते हैं क्योंकि उनके माता पिता उनके लिए समय ही नहीं दे पाते। बहुत बार तो बच्चे अपने माता पिता से बढ़कर आया या उनकी देखभाल करने वालों के अधिक निकट होते हैं। बच्चों को हमारी ज़रूरत है! पता भी नहीं चलेगा कि वे कब बड़े हो गए, और फिर हमारे हाथ नहीं आएंगे, तब हम जो चाहे कर सकते हैं हमारे पास बहुत समय होगा।

3. अपने बच्चों को घर के कुछ सीमित काम देकर उन्हें जिम्मेदारी दें। इससे उन्हें जिम्मेदारी आएगी और काम के महत्व का पता चलेगा।

4. अपने बच्चों के मन में डालें कि पैसा कमाने से बड़ा काम नाम कमाना है, पौलुस ने कहा, *''जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं उनकी चिंता किया करो''* (रोमियों 12:17)। हमें अपने बच्चों को ईमानदारी होने का महत्व सिखाना आवश्यक है।

5. नमूना देने का महत्व समझें। नमूना देने की शक्ति हमारे पास बच्चों पर पड़ने वाला सबसे बड़ा प्रभाव है। यदि आप अपने बच्चों को मसीह के जैसा बनाना चाहते हैं, तो उनके सामने मसीह का नमूना दें।

माता पिता के रूप में हमारा काम कठिन है, पर निश्चय ही यह असम्भव काम नहीं है। परमेश्वर की सहायता से हम अपने बच्चों का सही पालन–पोषण कर सकते हैं। इसके लिए बहुत अधिक प्रार्थना, समझदारी और प्रयास की आवश्यकता है। हम इस बात को कभी न भूलें कि *''... लड़के यहोवा के दिए हुए भाग हैं, गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है। जैसे वीर के हाथ में तीर, वैसे ही जवानी के लड़के होते हैं। क्या ही धन्य है वह पुरुष जिस ने अपने तर्कश को उन से भर लिया हो! ... ''* (भजन संहिता 127:3–5)। ✠

–कैन टाइलर

क्या आप राज्य का बीज बो रहे हैं?

–मैक्सी बी. बोरन

यीशु ने सिखाया कि राज्य का ''बीज'' परमेश्वर का वचन है (लूका 8:11)। जब उस ''बीज'' को भले और ईमानदार लोगों के हृदयों में बोया जाता है तो यह परमेश्वर की महिमा का फल देगा। परमेश्वर का वचन उसके पास खाली नहीं लौटेगा बल्कि जिस इरादे से इसे दिया गया था उसे पूरा करके ही लौटेगा (यशायाह 55:11; याकूब 1:18 और 1 पतरस 1:23 जैसे वचनों पर भी विचार करें)।

मुझे जो सवाल परेशान करता है वह यह है कि ''क्या कलीसिया आज सचमुच में बीज बोने में लगी हुई है?'' कलीसिया तो लोगों से मिलकर ही बनती है इसलिए यह सवाल हर किसी से पूछा जाना आवश्यक है कि ''क्या आप राज्य का बीज बो रहे हैं?'' मसीही कहलाने वाले असंख्य लोग, जो इस सवाल का जवाब ईमानदारी से देंगे, उन्हें मानना पड़ेगा कि ''नहीं मैं दूसरी बातों में बहुत अधिक व्यस्त हूं। मुझे समय ही नहीं है, या मैंने समय ही नहीं निकाला कि बीज बो सकूं।''

मैं हर जगह अपने भाइयों के आगे विनती करता हूं कि हम पहले परमेश्वर के राज य को ढूंढें और अपने प्रियजनों, मित्रगणों और जान पहचान वालों के हृदयों में राज य का बीज बोना आरम्भ कर दें। मामला गम्भीर है क्योंकि लोग जहां पर अनन्तकाल का समय बिताएंगे वह अधर में हैं!

आप यह पक्का कह सकते हैं कि शैतान ''जंगली बीज'' बोने में लगा हुआ है! और कलीसिया के ''सो रहे'' हैं जबकि वह अपने काम में लगा हुआ है (पढ़ें मत्ती 13:24–30, 36–43)! कितनी बड़ी त्रासदी है! शैतान और सहायकों के लिए न्याय वाले दिन, हाय, हाय, हाय। पर उनका क्या होगा जो ''सोये रहे''? हमें चाहिए कि इफिसियों 5:14 को पढ़ें।

खोए हुए को सिखाने का आसान ढंग

–जैक हैरीमन

जब मुझे किसी ऐसे व्यक्ति के साथ अध्ययन करने का अवसर मिलता है जो बुनियादी बातों को तो मानता हो पर उसे सुसमाचार की समझ न हो और उसने इसे अभी न माना हो, तब मैं चार कदमों वाली इस योजना को अपनाता हूं:

पहली, मैं इस तथ्य को साबित करता हूं कि हम पुराने नियम के नहीं बल्कि नये नियम के अधीन रहते हैं और मैं इसके महत्व को सबूत के साथ बताता हूं। पुराना नियम सीनै पहाड़ पर परमेश्वर और इस्राएल जाति के बीच बांधी गई एक वाचा थी (व्यवस्थाविवरण 5:1–3; भजन 147:19, 20)। अन्यजाति जगत कभी भी इस वाचा के अधीन नहीं था, और यीशु की मृत्यु के बाद से यहूदी जगत भी इसके अधीन नहीं रहा था। इस कारण हमें निर्देश नये नियम से ही लेना आवश्यक है।

दूसरी, मैं बाइबल के अध्ययन के साधारण ढंग को साबित करता हूं। इसमें दो बातें शामिल हैं। (1) सभी तथ्यों को इकट्ठा किया जाना आवश्यक है। उदाहरण के लिए जब पहरूए यीशु को पकड़ने के लिए आए तो मरकुस कहता है कि उनमें से एक ने जो उसके पास खड़े थे तलवार निकालकर महायाजक के सेवक का कान उड़ा दिया। मत्ती हमें बताता है कि तलवार चलाने वाला यह व्यक्ति यीशु का चेला था। लूका बताता है कि उड़ाया गया कान दाहिना था। यूहन्ना उस तलवारबाज की पहचान पतरस के रूप में और जिसका कान काटा गया था उसकी पहचान मलखुस के रूप में बताता है। (2) बाइबल छात्र के लिए सभी तथ्यों से सही सही तर्क देना आवश्यक है। बाइबल के किसी भी विषय को इसी तरीके से देखना आवश्यक है।

तीसरी, ग्रेट कमीशन के विवरणों का अध्ययन करके मैं इन सब को इन प्रश्नों पर लागू करता हूं कि कोई व्यक्ति उद्धार पाया हुआ, कैसे और कब बनता है। मत्ती कहता है कि जब उसका बपतिस्मा पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में होता है (मत्ती 28 :19)। मरकुस कहता है कि उद्धार पाने के लिए विश्वास करना और बपतिस्मा

लेना आवश्यक है (मरकुस 16:16)। लूका मन फिराव और पापों की क्षमा को जोड़ देता है (लूका 24:46)। सो उद्धार पाया हुआ व्यक्ति कोई तब बनता है जब वह सुसमाचार को सुनता, इस पर विश्वास लाता, पिछले पापों से मन फिराता और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेता है।

चौथी, मैं प्रेरितों 2 के संक्षिप्त अध्ययन के द्वारा इसे समाप्त करता हूं। जिन लोगों ने सुसमाचार को सुना और इस पर विश्वास किया (आयतें 14–37) था, जब उन्होंने पूछा कि वे और क्या करें, तो उन्हें अपने–अपने पापों की क्षमा के लिए मन फिराकर यीशु के नाम में बपतिस्मा लेने को कहा गया (आयत 38)।

मैं विश्वास करने, मन फिराने और बपतिस्मा लेने की दो बातों पर ज़ोर देता हूं। पहली, यह एक इकाई के रूप में इकट्ठी खड़ी हैं। इनमें से किसी को भी निकाला नहीं जा सकता जिससे परिणाम पापों की क्षमा हो। दूसरी, यह विश्वास से मन फिराव और फि र बपतिस्मे से उद्धार की तर्कसंगत कड़ी है यानी ऐसी कड़ी जिसे हमारे कुछ धार्मिक पड़ोसियों द्वारा तोड़ा मरोड़ा गया है।

सवाल? अपने आज्ञापालन में आप कहां पर हैं। ✠

मसीह की कलीसिया की आराधना सभा में जाने पर क्या उम्मीद करें

मसीह की कलीसिया में आने पर आप हमारे सम्मानित अतिथि होंगे। हो सकता है कि आप में और हम में कुछ बातों पर अलग विचार हों पर हम आपके साथ स्नेह और शिष्टाचार भरा व्यवहार करने की कोशिश करेंगे। हमारी आराधना सभा में कोई शोर शराबा नहीं होता। आराधना में और प्रार्थना में अगुआई का काम बपतिस्मा प्राप्त पुरुष करते हैं।

भजन **गाने** के लिए बाजों का इस्तेमाल नहीं किया जाता। स्त्री हों या पुरुष सब को गाने के लिए कहा जाता है।

हम हर हफ्ते **प्रभु भोज** में भाग लेते हैं।

हमारी **प्रार्थनाएं** सादगी के साथ पिता परमेश्वर के सामने विश्वास से भरी हुई हमारी याचनाएं होती हैं।

सरमन मसीह पर केन्द्रित और बाइबल के उदाहरणों में से दिए जाते हैं जो वहां उपस्थिति लोगों को समझाने और उनकी आत्मिक उन्नति के लिए होते हैं।

बाहरी लोगों से **चंदा** देने की उम्मीद नहीं की जाती।

आराधना सभाएं आपको परेशान करने के लिए नहीं बल्कि परमेश्वर को महिमा देने और आने वाले सब लोगों को बाइबल सिखाने के लिए होती हैं।

हमारे साथ आराधना के लिए आने पर आपका स्वागत है।

6 छोटी कहानियां

- एक बार गांव के लोगों ने मिलकर बारिश के लिए प्रार्थना करने का फैसला किया। प्रार्थना करने के दिन एक छोटे लड़के को छोड़ किसी के पास छतरी नहीं थी।

  यह **विश्वास** है

- जब आप बच्चों को ऊपर को उछालते हैं तो वे हंस रहे होते हैं, क्यों उन्हें मालूम होता है कि आप उन्हें पकड़ लेंगे।

  यह **भरोसा** है

- रात को हम सोने के बिस्तर पर इस आश्वासन के बिना जाते हैं कि सुबह उठ ही जाएंगे, पर फिर भी जगने के लिए अलार्म सेट कर लेते हैं।

  यह **उम्मीद** है

- कल का कुछ भी ज्ञान न होने के बावजूद हम भविष्य के लिए बड़ी बड़ी योजनाएं बनाते हैं।

  यह **आत्मविश्वास** है

- संसार को दुखों और परेशानियों में घिरा हुआ पाते हैं, पर फिर भी हम शादी ब्याह करते और बच्चे पैदा करते हैं।

  यह **प्रेम** है

- एक बुजुर्ग की शर्ट केऊपर लिखा हुआ था, 'मैं 80 साल का बूढ़ा हूं। पर मैं स्वीट सिक्सटीन और 64 साल का तजुर्बा रखता हूं।'

  यह **एटीच्यूड** है

शुभ दिन। और इन्हीं कहानियों को याद रखते हुए ज़िंदगी जीएं।

जब मैं छोटा था तब मुझे कोई सोने को कहता तो मुझे यह सज़ा लगती। आज जब सोने को मिल जाता है तो लगता है कि छुट्टियों पर आया हूं।

परमेश्वर के अगुवे कौन हैं?

-डैन आर. ओवन

विश्वास के समुदाय के परमेश्वर के अगुवे साफ नजर आते हैं। यदि उनके मन परमेश्वर के साथ सही हैं, ऐल्डर और प्रचारक परमेश्वर के कुछ महत्वपूर्ण अगुवे हैं, परमेश्वर के अन्य पुरुष व स्त्रियां भी जो परमेश्वर की सेवकाइयों में सेवा करते हैं। परमेश्वर के अगुवे हैं। मसीह के मिशन को पूरा करने के लिए हमें इन में से कई लोग होना आवश्यक हैं और अच्छा होगा यदि हम ऐसे अगुओं की बाइबल में दी गई विशेषताओं पर विचार करें।

परमेश्वर के अगुवे वे लोग हैं जिन्होंने स्वयं को पवित्र लोगों के सेवक होने के लिए ठहरा दिया'' है। स्तिफनास के परिवार ने मसीह की इच्छा को पूरा करते हुए दूसरों की सेवा करने का निश्चय कर लिया था। प्रेम और सेवा और दयालुता का उनका व्यवहार दूसरों को दिखाई देता था। पौलुस ने शेष कलीसिया से कहा, ''ऐसों के अधीन रहो वरन हर एक के जो इस काम में परिश्रमी और सहकर्मी हैं'' (1 कुरिन्थियों 16:16)। परमेश्वर के अगुवे वे होते हैं जिन्हें बाइबल ''आत्मिक'' कहती है। ये वे लोग हैं जिनका दृष्टिकोण परमेश्वर के प्रकट वचन के द्वारा बदल गया है। यह ऐसे लोग हैं जो भटके हुओं को वापस लाने की तलाश करते और दूसरों का बोझ उठाने में सहायता करते हैं (गलातियों 6:1–3)। वे ऐसे लोग नहीं है जिनकी द्वेष और झगड़ा करने वाले के रुप में पहचान हो (1 कुरिन्थियों 3:1–3)।

परमेश्वर के अगुवे उन लोगों को प्रोत्साहित करने वाले होते हैं जो एकता को बढ़ावा देने हों। वे कोराह या दियुत्रिफुस या उन लोगों की तरह ऐसे अगवे नहीं हैं जिन्होंने कुरिन्थिस की कलीसिया में गुट बनाए थे। परमेश्वर के अगुवे बरनबास के जैसे है, जिसे प्रेरितों ने ''शांति का पुत्र'' नाम दिया था। बरनबास ने यरूशलेम की कलीसिया को तरसुस वासी शाऊल को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने अपने प्रोत्साहन और शिक्षा के द्वारा अन्ताकिया की कलीसिया को बनाया, क्योंकि लोग उसे सुनाम और पवित्र मानते थे। उसने यूहन्ना, मरकुस पर विश्वास किया और उसकी क्षमता को देखा। परमेश्वर के अगुवे इस प्रकार के लोग होते हैं।

हम आप से परमेश्वर के लिए अगुवे बनने और उस नेतृत्व के अधीन होने का आग्रह करते हैं जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है। परमेश्वर के अगुवे आत्मिक प्रोत्साहन देने वाले लोग हैं जो एकता को बढ़ावा देते हैं और उन्होंने अपने आप को पवित्र लोगों के बीच सेवक होने के लिए ठहराया है। आप परमेश्वर के लिए अगुवे बन सकते हैं। ✠

नूर फैलाओ

–जैरी ई. जैंकिन

यह गीत प्रेरितों के काम की पुस्तक में दर्ज पौलुस को मिले दर्शन पर आधारित है जहां पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ उससे विनती करके कह रहा है कि *''पार उतरकर मकिदुनिया में आ, और हमारी सहायता कर''* (प्रेरितों 16:9)। पौलुस ने असल में एशिया माइनर में अपने काम को बढ़ाते हुए अंताकिया से बितुनिया में जाने की उम्मीद से अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा का आरम्भ किया था, परन्तु पवित्र आत्मा के द्वारा उसे रोक दिया गया था।

पौलुस ऐसे निर्देशों को कभी टालता नहीं था। आखिर वह परमेश्वर के हाथ में जो था। जब एक दरवाजा बंद हो जाता तो पौलुस आनन्द से मुड़कर किसी भी दूसरे दरवाजे की ओर चल पड़ता जो उसके लिए खुला होता था। इसी नमूने का पालन करते हुए जब हमारे जीवनों में दरवाजे बंद हो जाते हैं तो हमें उन दूसरे दरवाजों की तलाश में जो परमेश्वर ने हमारे लिए खोले होते हैं, विश्वास से आगे बढ़ते रहना चाहिए।

उस दर्शन की बात को मानकर पौलुस एक दूसरे महाद्वीप की ओर निकल गया। हो सकता है कि इस नये देश में उसके आरम्भिक अनुभव उसे कम सामर्थ वाले लगे हों। उसे शनिवार की सुबह नदी के किनारे महिलाओं की एक टोली मिली। किसी को लगा होगा कि इतनी छोटी से टोली में उनके समय का कोई महत्व नहीं होगा। परन्तु पौलुस ने ऐसा नहीं सोचा। ये कुछ महिलाएं जो शनिवार के दिन उससे मिली थीं, इतिहास को बदल देने वाली थीं। इस घटना से सीख लेते हुए हमें छोटे समूहों को सिखाने से कभी इनकार नहीं करना चाहिए। अनिच्छा या हिचकिचाहट वाला व्यवहार इस बात को दिखाता है कि हमें छोटी–छोटी बातों के अवसर का फिर से अध्ययन

करने की आवश्यकता है।

इस नये देश में पौलुस से दूसरे बड़े अनुभव से उसकी पिटाई और जेल जाना हुआ। परन्तु पौलुस ने हार नहीं मानी। और उसके प्रयासों के कारण पूरे यूरोप में कलीसिया आरम्भ हुई और फैली। हमें यह याद रखना आवश्यक है कि परेशानियां चाहे कितनी भी हों, सुसमाचार का सिखाया जाना आवश्यक है। हमारी पहली वचनबद्धता खोए हुओं को सिखाना है। इसके बीच में किसी को भी नहीं आने देना है।

इस मिशनरी यात्रा के प्रति पौलुस का रवैया कैसा था? *''वहां पहुंचकर उन्होंने कलीसिया इकट्ठी की और बताया कि परमेश्वर ने उनके साथ होकर कैसे बड़े–बड़े काम किए, और अन्यजातियों के लिये विश्वास का द्वार खोल दिया''* (प्रेरितों 14:26)। विशेषकर इस वचन पर ध्यान दें, *''कि परमेश्वर ने उनके साथ होकर कैसे बड़े बडे काम किए।''*

जब हम अपने सामने किए जाने वाले काम पर विचार करते हैं तो यह हमें दीन बना देता है। बड़े लोग बनने या बहुत सफल होने के लिए काम न करें। निजी तौर पर या मण्डली के रूप में हमें इस बात से नहीं कि हम इतने बड़े या कितने सफ़ल होते हैं बल्कि प्रतिदिन ''खोए हुए संसार की चिंता'' के साथ जीना आवश्यक है। ✠

मसीहियत: उत्तम मार्ग

इसका अर्थ उद्धार है

''द्वार मैं हूं; यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे, तो उद्धार पाएगा, और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा'' (यूहन्ना 10:9)

यह हमें हमारे पापपूर्ण जीवन से छुड़ाती है

''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं'' (2 कुरिन्थियों 5:17)

परमेश्वर मसीही व्यक्ति के नये जीवन के द्वारा काम कर सकता है

''अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य्य करता है'' (इफिसियों 3:20)

मसीही लोगों का परमेश्वर के साथ मेल हुआ है

''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन भावुक न हो और न डरे'' (यूहन्ना 14:27)

–चार्ल्स बॉक्स

मुझे पहचानो

क्या आप मुझे पहचान सकते हैं? हर संकेत को पढ़ें और ध्यान से विचार करें। यदि आप पहले संकेत में अनुमान लगा लेते हैं कि मैं कौन हूं, तो खुद को 100 अंक दे दें। यदि आप को पांचवें संकेत के बाद पता चलता है कि मैं कौन हूं, तो आपके अंक 60 हैं। इसी प्रकार से दूसरे संकेतों के लिए भी करें। जब आप को यकीन हो जाए कि आप मुझे पहचान गए हैं, तो परमेश्वर के वचन से उन तथ्यों की पुष्टि के लिए प्रत्येक संकेत के आगे दिए वचन में से देखें। एक मसीही के रूप में मैं एक अच्छा आदर्श हूं।

1. 100 मुझे परमेश्वर की ओर से बाइबल की ओर से पांच पुस्तकें लिखने की प्रेरणा दी गई थी।
2. 90 मैंने उस स्त्री की देखभाल की जो वास्तव में मेरी माता नहीं थी (यूहन्ना 19:26)
3. 80 यीशु के द्वारा मुझे ''गर्जन का पुत्र'' नाम दिया गया (मरकुस 3:17)।
4. 70 मैंने निकुदेमुस के यीशु से रात को मुलाकात करने के लिए आने की बात लिखी (यूहन्ना 3:1–21)।
5. 60 मेरी शब्दावली में प्रमुखता से पाया जाने वाला शब्द प्रेम है (1 यूहन्ना 4, 5)।
6. 50 मैं आम तौर पर पतरस और याकूब के साथ होता था जो खास मौकों पर यीशु के साथ हुआ करते थे (मत्ती 17:1)।
7. 40 मेरी एक पुस्तक का आरम्भ इस घोषणा के साथ होता है, ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था'' (यूहन्ना 1:1)।
8. 30 अपनी एक अन्य पुस्तक में मैंने लिखा, ''उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हमने सुना, और जिसे अपनी आंखों से देखा, वरन जिसे हम ने ध्यान से देखा; और हाथों से छूआ, जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, ...'' (1 यूहन्ना 1:1, 3)।
9. 20 मैं यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की उसकी परीक्षा के दौरान उसके साथ था (19:25)।
10. 10. हमें सांसारिक इतिहास बताता है कि स्वाभाविक मृत्यु मरने वाला केवल मैं ही था, जो सब चेलों के बाद में मरा हूं। निर्वासन के काल के दौरान मुझे परमेश्वर की ओर से विशेष दर्शन दिए गए थे (प्रकाशितवाक्य 1:1, 4)।

(उत्तर के लिए पुस्तक के अंत में कवर के अंदर का पेज देखें)

चुनौती लें! सरगर्म हों!

-डेविड चैडवैल

क्या आपने इस बात पर ध्यान दिया है कि महान अगुआई बाइबल के हर महत्वपूर्ण काल में हुई है? इस्राएलियों की तथा आरम्भिक कलीसिया की अगुआई भक्त जनों ने अपने समय के चरित्र को तय किया। परमेश्वर ने अपने आत्मिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए उनकी अगुआई को प्रमुख साधन के रूप में इस्तेमाल किया। यदि आप इस पर विचार करें कि बड़ी आत्मिक उन्नति की हर बड़ी पीढ़ी का सम्बन्ध असाधारण अगुवे से रहा है। उस अगुवे का नाम आज भी मसीही लोगों के बीच आम है यानी उन्हें आज भी लोग जानते हैं।

मूसा, बाइबल के इतिहास के शायद सबसे कठिन समय में परमेश्वर के महानतम अगुओं में से एक *''पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था''* (गिनती 12:3)। मूसा ने परमेश्वर के उन लोगों की अगुआई की जो शायद सबसे अधार्मिक, अज्ञानी, विश्वासहीन और स्वार्थी लोग थे।

यहोशू, उन तीन जनों में से एक जिन्होंने परमेश्वर के अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए उसकी सामर्थ और योग्यता में पूरा विश्वास किया था (गिनती 14:1–10)। इस्राएल की कुछ विश्वास से भरी, भक्त पीढ़ियों में अगुआई दी (न्यायियों 2:7–10)।

दाऊद जो परमेश्वर के प्रति दिलो–जान से समर्पित था (1 शमूएल 17:23–26), जिसने शाऊल की हत्या करने से दो बार इसलिए इनकार कर

दिया था क्योंकि परमेश्वर ने शाऊल को राजा बनाया था (1 शमूएल 24:3–6; 26:5–12), ने इस्राएल को परमेश्वर के प्रति समर्पण के शिखर तक पहुंचाया।

पतरस, जिसे यीशु का बार–बार इनकार करने की उसकी अपनी आत्मिक नाकामी ने अपने ऊपर भरोसा न रखकर यीशु में विश्वास रखना सिखा दिया (लूका 22:55–62), उसने कलीसिया के आरम्भ में यहूदी मसीहियों के लिए सामर्थपूर्ण अगुआई प्रदान की।

पौलुस, मसीही लोगों का खूंखार सताने वाला और यीशु का इनकार करने वाला, उसने मसीह में आने के बाद (प्रेरितों 26:8–11) इतनी प्रभावशाली अगुआई दी कि कलीसिया यहूदी लहर से वैश्विक लहर में बदल गई।

यह ध्यान करना गंभीर कर देने वाला है कि बड़े आत्मिक पतन कि इस्राएल के समयों में निराश करने वाली लीडरशिप भी थी (कलीसिया के अस्तित्व में आने के पहले 70 वर्षों के दौरान नये नियम में ऐसी समस्या के सामने आने के बारे में बहुत कम मिलता है)। अभक्ति के इस्राएल के समयों में परमेश्वर के बड़े प्रवक्ता तो हुए हैं (शमूएल, एलिय्याह, एलिशा, यशायाह, यिर्मयाह), परन्तु बड़े अगुवे नहीं।

आज के आधुनिक युग की हमारे सामने सबसे बड़ी और चुनौतियां हैं। बड़ी बड़ी समस्याएं और बड़े बड़े अवसर साथ–साथ चलते हैं। मूसा (गुलामों का छुटकारा), यहोशू (विजय का युद्ध), दाऊद (पतन हो रही जाति), पतरस (प्रभावशाली फरीसियों की अगुआई में सामर्थपूर्ण, संगठित यहूदी विरोध), और पौलुस (प्रतिकूल विरोधी संसार और सरकार) ने इसे साबित किया। ✠

- ''बहुत कठिन काम है। मैं इसे नहीं कर सकता।''
- ''मेरी बात कोई नहीं सुनेगा।''
- ''मुझे डर लगता है।''
- ''मैं इतना तगड़ा नहीं हूं कि ऐसी चुनौती ले सकूं।''
- ''परमेश्वर ने मुझे यह तोड़ा नहीं दिया है।''
- ''आज के ज़माने में लोग आत्मिक बातों में दिलचस्पी नहीं लेते।''
- ''हम जीत नहीं सकते। लोग बहुत खराब हैं जो दिन रात घूमते रहते हैं।''

नकारात्मक सोच शैतान का सबसे बड़ा हथियार है।

अच्छा मसीही

-डैल्टन की

मेरी एक अच्छी मित्र है। वह शराब नहीं पीती या अपने शरीर को तम्बाकू के साथ खराब नहीं करती। वह अपने दिमाग और अपने जीवन को नशों से नष्ट नहीं करती। मैंने उसे कभी किसी की चुगली खाते या किसी से झूठ बोलते नहीं सुना है। वह नाइट क्लबों या नाचघरों में जाकर अपना समय वेस्ट नहीं करती। मुझे नहीं याद कि कभी मैंने उसे गाली देते या बदतमीज़ी से बोलते सुना हो। कारोबार में भी उसने कभी किसी के साथ हेराफेरी नहीं की। बहुत से लोग मेरी इस मित्र को ''अच्छी मसीही'' कहेंगे।

आपको पता हो कि मैं अपने कुत्ते के लिए अक्सर कहता हूं कि यह बड़ा सुंदर कुत्ता है!

हमें यह पता होना आवश्यक है कि मसीही होने के लिए केवल बुराई न करना ही काफ़ी नहीं है। मसीही होने का मतलब विश्वास से जीवन बिताते हुए और भलाई करते हुए मसीह के प्रति समर्पण है।

मसीह ने समझाया कि *''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपे से इनकार करे और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले''* (लूका 9:23)। यदि हम चाहते हैं कि मसीह के नाम से जाने जाएं तो हमारे लिए मसीह के प्रति पूरा और सम्पूर्ण समर्पण होना आवश्यक है।

संसार में बहुत से भले और ईमानदार लोग हैं जो दुर्भावनापूर्ण ढंग से बुराई के काम नहीं करते हैं। इन भले लोगों में से बहुत से लोग सदाचारी लोग हैं जो हमारे पड़ोसी, हमारे मित्र और हमारे रिश्तेदार हैं। हो सकता है कि कई मामलें में वे कलीसिया के कुछ सामान्य लोगों से अधिक सदाचारी हों।

परन्तु उनकी प्रशंसनीय जीवनशैली के कारण उन्हें ''अच्छे मसीही'' नहीं कहा जा सकता। जब तक कोई मसीह के पास आकर सुसमाचार की आज्ञा को नहीं मानता है, तब तक वह मसीही नहीं है। कोई भी व्यक्ति अपने आपका उद्धार करने के लिए इतना पवित्र जीवन नहीं जी सकता, और मसीह के नाम को छोड़ कोई दूसरा नाम नहीं है जिससे हमारा उद्धार हो सके (प्रेरितों 4:12)।

याद रखें कि मेरे कुत्ते के बीच और एक ''अच्छा मसीही'' के बीच में बहुत बड़ा फर्क है। ✞

तुम को तुम्हारा पाप लगेगा

-ओवन कासग्रोव

हाल ही में हमने एक आदमी की खबर देखी जिसमें करीब तीस साल पहले अपनी पत्नी का कतल कर दिया था। वह वहां से दूर किसी दूसरे नगर में जाकर रहने लगा था। उसने वहां अपना नाम बदल लिया, किसी दूसरी महिला से शादी कर ली, और उससे अपना परिवार बना लिया।

किसी छोटी सी घटना से वह पुलिस के सम्पर्क में आ गया और उसकी उंगलियों के निशान लिए गए। कुछ दिनों के बाद कम्पयुटर के द्वारा तीस साल पहले हुई किसी हत्या के मामले में उसकी उंगलियों के निशान मैच कर गए और वह पकड़ा गया।

हुडिन हैड विल्सन की मार्क क्वेन की कहानी उंगलियों के निशान लेने की कला की सबसे पहली कहानी थी। 1901 में कॉडलैंड यार्ड के सर एडवर्डन आर. हैनरी ने उंगलियों के निशानों के वर्गीकरण और संकेत बताने वाले एक सिस्टम का आविष्कार किया। अब फोटों की पहचान के लिए जहां एक उंगली का निशान बारह तुलनात्मक बिंदुओं में किसी दूसरे से मिलान होता है उसकी गणितीय सम्भावना एक में से चौंसठ अरब होती है। जब दस उंगलियों और अंगूठे को मिलाने पर यह अंतर बहुत बड़ा फर्क डालते हैं।

दोष की घोषणा करने और उसे तय करने में उंगलियों के निशान के विज्ञान से भी बड़ी कुछ बात है और वह हर जगह मौजूद परमेश्वर की नज़र है। ''सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुली और प्रगट हैं'' (इब्रानियों 4:13)।

पुराने नियम के सैकड़ों उदाहरण बहुतायत से इस बात को साबित करते हैं कि परमेश्वर मनुष्य की गुप्त बातों को जानता है (रोमियों 2:16)। मूसा ने ज़ोर देकर इस्राएलियों को चेतावनी दी, ''जान रखों की तुमकों तुम्हारा पाप लगेगा'' (गिनती 32:23)।

इसी लिए मनुष्य के लिए आवश्यक है कि उसके पाप क्षमा किए जाएं (प्रेरितों 2:38), मिटाए जाएं (प्रेरितों 3:19) और धो ढाले जाएं (प्रेरितों 22:16)। उनसे चाहे कितना भी भाग लिए जाए, कितना भी उन्हें छुपा दिया जाए, कितना भी उन्हें सही साबित करने की कोशिश की जाए, या कितना भी झूठ क्यों न बोला जाए वे मिट नहीं सकते। उन्हें मेमने के लहू से धोया जाना आवश्यक है (1 पतरस 1:19; 1 यूहन्ना 1:7)।

आज के धार्मिक शिक्षा देने वाले लोगों को दोषपूर्ण भावनाओं को मिटाने

में सहायता के लिए बड़े यत्न करते हैं परन्तु प्रभु पहले दोष को मिटाने पर ज़ोर देता है। बिना दोष को मिटाए दोषपूर्ण भावनाओं को मिटाना दण्ड से बचने के लिए किसी दूसरे राज्य में भाग जाने के जैसा है। दोष तो बना रहता है और रिकॉर्ड अंत में इसे पकड़वा ही देता है।

इसी लिए सुसमाचार ''खुशखबरी'' है। यह केवल अपमान और दोष को मिटाता है बल्कि उस अनन्त दण्ड को भी जो पाप के कारण मिलता है। मसीह में परमेश्वर के बयान से बाहर दान और उसके द्वारा पापों की क्षमा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो! ✠

परमेश्वर ने यीशु मसीह और प्रेरितों के द्वारा क्या प्रकट किया?

उसने विशेष रूप में अपने ईश्वरीय प्रेम और करूणा को और संसार के उद्धार के लिए अपनी योजना को दिखाया।

1 पतरस 1:10-12 - ''इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यवक्ताओं ने बहुत खोजबीन और जांच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यवाणी की थी। उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उनमें था, और पहिले ही से मसीह के दुखों की और उनके बाद होने वाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था। उन पर प्रगट किया गया, कि वे अपनी नहीं वरन तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया, तुम्हें सुसमाचार सुनाया; और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं।''

इफिसियों 3:4, 5- ''जिससे तुम पढ़कर जान सकते हो कि मैं मसीह का वह भेद कहाँ तक समझता हूँ। जो अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है।''

बाइबल की कुंजियां *पाठ 10*

यीशु का सुसमाचार

सुसमाचार शब्द का अर्थ है खुशी की खबर अथवा यीशु का शुभ समाचार (रोमियों 10:15)। इसके विषय में बहुत पहले प्रचार किया गया था अर्थात इसकी प्रतिज्ञा की गई थी। यीशु ने इसे दिया था और इस में उद्धार देने की सामर्थ है। जो लोग इसमें विश्वास करके इसकी आज्ञा को मानते हैं वे उद्धार पाते हैं। पौलुस ने कहा था, *''क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है''*(रोमियों 1:16)।

यदि कोई और प्रकार का सुसमाचार प्रचार किया जाता तो उसके लिए पौलुस इस प्रकार से कहता है, *''मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं''* (गलातियों 1:6–7)। फिर 8 आयत में वह कहता है, *''परन्तु यदि हम यह स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो स्त्रापित हो।''* परन्तु कोई तर्क देते हुए कह सकता है कि ''यह बात बिल्कुल सही है कि कोई भी दूसरे सुसमाचार को प्रचार करने का प्रयास नहीं करेगा।'' लेकिन कई लोग आज भी ऐसा कर रहे हैं। कई लोग आज प्रचार कर रहे हैं कि केवल विश्वास के द्वारा उद्धार सम्भव है, कई लोग कहते हैं कि बहुत सी डिनोमिनेशनों (साम्प्रदायिक कलीसियाओं) के होने में कोई बुराई नहीं है। हमारा उद्धार केवल विश्वास से होता है तथा उद्धार के लिए केवल अनुग्रह काफ़ी है। उनके अनुसार बपतिस्मे का अर्थ है छिड़काव या सिर के ऊपर पानी उण्डेलना इत्यादि। ये सब दूसरे प्रकार के सुसमाचार हैं। प्रेरित पौलुस के अनुसार ये सब झूठे सुसमाचार हैं। केवल एक ही ''सत्य सुसमाचार'' है (1 कुरिन्थियों 15:1–4; मरकुस 16:15–16)।

इसके बाद हम देखते हैं कि पौलुस ने कहा था कि जो लोग सुसमाचार को नहीं मानते हैं प्रभु उनसे पलटा लेगा। उसने कहा, *''और तुम्हें जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ,*

धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:7–9)।

परन्तु सुसमाचार को किस प्रकार से मान जा सकता है? इसी बात का हम यहां देखने वाले हैं।

सबसे पहले हमें सुसमाचार की वास्तविकताओं को देखना आवश्यक है। सुसमाचार मुख्य रूप से तीन बातों पर आधारित है। ये मुख्य बातें है– यीशु का क्रूस पर मारा जाना, उसका कब्र में गाड़े जाना तथा मरे हुओं में से जी उठना। हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, *''हे भाइयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिस में तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैं ने सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा''* (1 कुरिन्थियों 15:1–4)। सुसमाचार की प्रत्येक बात इन बातों पर आधारित है अर्थात यीशु क्रूस पर मारा गया, गाड़ा गया और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठा। यह मसीहियत की बुनियाद है।

दूसरी बात यह है कि सुसमाचार में कुछ आज्ञाएं हैं, जिन्हें हमें मानना आवश्यक है। बाइबल कहती है कि सत्य को सुनना आवश्यक है। क्योंकि *''विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है''*(रोमियों 20:17)।

जैसा कि रोमियों 10:17 में बताया गया है कि परमेश्वर के वचन को सुनने के पश्चात्त विश्वास लाना आवश्यक है, अर्थात जो आपने सुना है उसमें विश्वास लाना। आगे हम पढ़ते हैं कि *''विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है''* (इब्रानियों 11:6)। विश्वास करने के पश्चात्त मन फिराना अर्थात अपने पापों से मन फिराना आवश्यक है। यीशु ने कहा था, *''मैं तुम से कहता हूं कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नष्ट होगे''* (लूका 13:3) और फिर प्रेरितों 17:30 में हम पढ़ते हैं, *''जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा''* (मत्ती 10:32)। प्रेरितों 8 अध्याय में जिस मनुष्य के विषय में हम पढ़ते हैं उसने

विश्वास किया था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, उसी समय प्रचारक फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। जो अन्तिम आज्ञा उद्धार की योजना में है, वो है बपतिस्मा लेना। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने लोगों से कहा था, *''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने–अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे''* (प्रेरितों 2:38)। यीशु ने भी इस संबंध में कहा था, *''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा''* (मरकुस 16:16)। जो भी व्यक्ति इन साधारण सी आज्ञाओं को मान लेता है, यीशु उसका उद्धार करता है और उसे अपनी कलीसिया में मिला लेता है (प्रेरितों 2:47)। परन्तु कुछ लोगों को यह बात इतनी साधारण लगती है कि वे इसे मानना नहीं चाहते। उनके अनुसार उद्धार की योजना काफ़ी जटिल और कठिन होनी चाहिए तथा उसके कई प्रकार के नियम होने चाहिए। प्रभु ऐसी बात से अप्रसन्न होता है। उद्धार का केवल एक मार्ग है जिसे प्रभु ने दिया है (यूहन्ना 14:6; याकूब 1:22)।

तीसरी बात हम यह देखते हैं कि सुसमाचार में एक प्रतिज्ञा दी। प्रभु ने यह वचन दिया कि हमारे पापों को वह क्षमा करेगा (प्रेरितों 2:38), हमें पवित्र आत्मा का दान (प्रेरितों 2:38; 3:19) प्रभु की उपासना करने का अवसर मिलता है (यूहन्ना 4:23, 24)। यदि हम मरने तक विश्वासी रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 2:10; मत्ती 25:46) तो प्रभु यीशु में सब आशिषें (इफिसियों 1:3) तथा अनन्त जीवन की आशा मिलती है। सच्चाई यह है कि आज्ञापालन तथा विश्वासी बने रहने से बड़ी और कोई बात नहीं।

इसलिए यह प्रभु का सुसमाचार है जिसकी वास्तविकताओं पर विश्वास करना है तथा इसकी आज्ञाओं का पालन करना है। प्रभु उन पर अपना अनुग्रह करता है जो उसकी इच्छा को मानकर उसका विश्वास करते हैं। वह सबको निमन्त्रण देता है कि वे उसके पास आएं। यह मनुष्य की जिम्मेदारी हैं कि वह इसका लाभ उठाएं। ✠

अगर आपको पाप के फल नहीं चाहिए तो फिर शैतान के बाग से दूर रहें। ''सब प्रकार की बुराई से बचे रहो'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:22)।

''मैंने पाप किया है''

-सिसल मे, जूनि.

''मैंने पाप किया है।'' हर कोई यह कह सकता है। *''यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं और उसका वचन हम में नहीं है''* (1 यूहन्ना 1:10)। *''सबने पाप किया है''* (रोमियों 3:23)। यह कहना सही है। *''जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी''* (नीतिवचन 28:13)।

हर कोई नहीं, जो कहता है कि मैंने पाप किया है, बल्कि जो पश्चातापी मन से कहता है। बाइबल में दाऊद को छोड़ राजा शाऊल ने सबसे अधिक बार इसे कहा है। पर उसे नकार दिया गया। *''इस बार मैं ने पाप किया है; यहोवा धर्मी है, और मैं और मेरी प्रजा अधर्मी हैं''* (निर्गमन 9:27)। परन्तु मूसा ने उत्तर दिया, *''मैं जानता हूं, कि न तो तू और न तेरे कर्मचारी यहोवा परमेश्वर का भय मानेंगे''* (निर्गमन 9:30)। पक्का है, *''यह देखकर कि मेंह और ओलों और बादल का गरजना बन्द हो गया फिरौन ने अपने कर्मचारियों समेत फिर अपने मन को कठोर करके पाप किया''* (निर्गमन 9:34)।

यह आज भी होता है। हां, ''प्रीचर, मैं जानता हूं कि मुझे कलीसिया में और अधिक जाना चाहिए,'' पर वह जाता नहीं है और जब वह ऐसा कह रहा होता है तब भी उसका जाने का कोई इरादा नहीं होता है। ''मेरी इस आदत ने बड़ा नुकसान किया है और मैं जानता हूं कि यह गलत है और मुझे सचमुच में इसे छोड़ देना चाहिए।'' पर वह छोड़ता नहीं है। ''जिस प्रकार से प्रभु ने मुझे आशिष दी है मुझे चाहिए कि मैं और उदारता से उसे दूं।'' पर इसकी जगह वह सोचता है कि उसका वेतन और बढ़ना चाहिए। ''मुझे गलती हो जाती है और लोगों के दिल दुखते हैं'' और वह अपने काम छोड़ता या छोड़ती नहीं है।

जैसा कि नीतिवचन से पता चलता है कि पाप को ढांप लेने का भक्तिपूर्ण विकल्प उसे मान कर छोड़ देना है।

दाऊद ने जब नातान द्वारा दिए उदाहरण में अपने पाप को और अपने आपको देख लिया तो उसने कहा था, *''मैं ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है''* (2 शमूएल 12:13)। भजनों में उसने बार–बार अपने पाप को मान लिया, अपने पश्चात्ताप का ऐलान किया और परमेश्वर के प्रति अपने कर्ज को मान लिया। *''मैं तो अपने अपराधों को जानता हूं, और मेरा पाप निरन्तर*

मेरी दृष्टि में रहता है। मैं ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है, ताकि तू बोलने में धर्मी और न्याय करने में निष्कलंक ठहरे'' (भजन संहिता 51:3, 4)। *''जब मैं चुप रहा तब दिन भर कराहते कराहते मेरी हड्डियां पिघल गईं। ... जब मैं ने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया और अपना अधर्म न छिपाया, और कहा, मैं यहोवा के सामने अपने अपराधों को मान लूंगा; तब तू ने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया''* (भजन संहिता 32:3, 5)। दाऊद ने बिना बहाना बनाए सचमुच के पश्चात्ताप को जताया, परमेश्वर के सामने अपने पाप को मान लिया और धार्मिकता पर चलने के लिए अपने मन को बदल लिया। इसी कारण उसे परमेश्वर के मन के अनुसारी व्यक्ति कहा गया है (प्रेरितों 13:22)। न तो पाप में बने रहने की शेखी और न सूअर की तरह कीचड़ में और गंदगी में लोटना है बल्कि पाप को मान लेना है। कुछ लोग अपनी शर्म को शान से दिखाते हैं। पाप को मान लेना दोष को मान लेना है, ज़िम्मेदारी स्वीकार करना और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना है, *''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है''* (1 यूहन्ना 1:9)। ✠

एक पिता की प्रार्थना

हे प्रेमी परमेश्वर,
तीन वर्ष के मेरे इस बच्चे ने
हर रोज़ की तरह सोने से पहले
तुझ से प्रार्थना की थी।
नींद में अपनी आंखें बंद होने से पहले
उसने प्रार्थना की थी कि
तू रात भर उसे सम्भाले
और मैं उसके बिस्तर पर
अभी भी घुटनों के बल हूं,
मेरा हाथ उसके बिखरे हुए बालों में पड़ा है,
तेरे सामने गिड़गिड़ाते हुए
मैं यह मिन्नत कर रहा हूं कि
हे प्रेमी प्रभु,
मुझे याद रखना,
हे दयालु प्रभु,
मुझे लायक पिता बना दे,
कि मैं इस नन्हें बालक को
तेरे सही और सच्चे मार्ग पर चला सकूं,
कि मैं उसके कदमों को सीधे
मार्ग पर चला सकूं,
हे परमेश्वर,
तुझ में उसका भरोसा
कभी न टूटे,
या मेरे कारण
कभी न बिगड़े
जिन बातों के लिए उसने
बिना किसी भय के
अपने भोलेपन में प्रार्थना की
मैं कांपते हुए हाथों से
उसी बचपने में
यह विनती करता हूं
कि हे प्रभु, दयालु प्रभु, मुझे याद रखना।

लेखक -अज्ञात

पवित्र शास्त्र के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

– जे. सी. चोट

प्रिय पाठक, बाइबल बहुत सी बातों के विषय में शिक्षा देती है। इस संक्षिप्त पाठ के द्वारा हम उन समस्त शिक्षाओं पर विचार नहीं कर सकते, इसलिए हम परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए बाइबल के पन्नों में से कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देंगे। पाठ के अधिकांश भाग में आप बाइबल के उन वचनों को पढ़ेंगे जो विभिन्न विषयों पर आधारित हैं। हमारा निवेदन है कि आप बाइबल की शिक्षाओं पर अच्छी तरह से विचार करें। – सम्पादक

क. बाइबल शिक्षा देती है कि **भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर बोलते थे,** *''और हमारे पास जो भविष्यवक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा और तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो, कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। पर पहिले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे''* (2 पतरस 1:19–21)।

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि **सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।** *''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए''* (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि **परमेश्वर की व्यवस्था खरी है।** *''यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं; यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं; यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आंखों में ज्योति ले आती है''* (भजन संहिता 19:7, 8)।

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि **परमेश्वर का वचन सत्य है।** *''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर, तेरा वचन सत्य है''* (यूहन्ना 17:17)।

ङ बाइबल शिक्षा देती है कि **परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा बातें कीं।** *''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप–दादों से थोड़ा–थोड़ा करके और भांति–भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें करके। इन अन्तिम दिनों में हमसे पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है''* (इब्रानियों 1:1, 2)।

ट. बाइबल शिक्षा देती है कि **परमेश्वर का वचन प्रबल है।** *''क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ–गांठ, और गूदे–गूदे को अलग करके, आर–पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है''* (इब्रानियों 4:12)।

ठ. बाइबल शिक्षा देती है कि **पवित्र आत्मा के दिए वचन में से कुछ भी बढ़ाया या घटाया नहीं जा सकता।** *''मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं, कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिसका वर्णन इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा''* (प्रकाशितवाक्य 22:18, 19)।

ङ बाइबल शिक्षा देती है कि **यीशु मसीह के सुसमाचार या परमेश्वर के**

वचन को हम में से कोई भी न बिगाड़े। *''मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वही दूसरा सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम यह स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो स्रापित हो। जैसा हम पहिले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं, कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो स्रापित हो...''* (गलातियों 1:6–9)

ढ. बाइबल शिक्षा देती है कि **यह आकाश में स्थिर है।** *''हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है''* (भजन संहिता 119:89)।

ण. बाइबल शिक्षा देती है कि **पवित्र शास्त्र की बात गलत नहीं हो सकती।** *''यदि उसने उन्हें ईश्वर कहा जिनके पास परमेश्वर का वचन पहुंचा (और पवित्रशास्त्र की बात असत्य नहीं हो सकती)''* (यूहन्ना 10:35)।

त. बाइबल शिक्षा देती है कि **यह युगानुयुग स्थिर रहेगी।** *''परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा, और यह वही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था''* (1 पतरस 1:25)।

थ. बाइबल शिक्षा देती है कि **यह सदैव अटल रहेगी।** *''घास तो सूख जाती है, फूल मुर्झा जाता है; परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा''* (यशायाह 40:8)।

द. बाइबल शिक्षा देती है कि **प्रभु का वचन कभी नहीं टलेगा।** *''आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी''* (मत्ती 24:35)। ✞

BIBLE COURSES, BOOKS, MAGAZINES & TV PROGRAMS AVAILABLE IN LOCAL LANGUAGES

Hindi/English/Punjabi

REGULAR : (Certificate, Diploma, Degree in Biblical Studies)
BY POST : Basic Bible Course, Advance Bible Course,
ONLINE : Complete Bible Study Full Course
Magazine : VOICE OF TRUTH (Hindi)

Contact:

Bro. Earnest Gill

0172-2690791, 4083146, whatsapp: 8284850007
E-mail: hindibiblecourse@gmail.com, basicbiblecourse@gmail.com

.....

HINDI

T.V. Program	:	**SHUBH SANDESH HINDI CHANNEL** Every Sunday, Tuesday 7:00 - 7:30 P.M.
Speaker	:	Sunny/Francis/Vinay David
Magazine	:	English Bible Teacher - Sunny David E-mail : sunny_davidin@yahoo.co.in Cell : 0 98108 96789 Hindi Bible Teacher - Francis David E-mail : davidfrancis53@rediffmail.com Cell 0 991191 69321
Bible Course	:	Hindi & English - Vinay David E-mail: Vinay_david2002@yahoo.co.in Cell : 0 99117 19517
Church meets at	:	C.R. Park, 1st block, Near Market No. 4 New Delhi 110019
Sunday Worship	:	11:00 A.M.

For More Information write to:

Church of Christ, Post Box 3815, New Delhi - 110049

.....

MALYALAM

Speakers	:	P. K. Varghese
T. V. Program	:	**Jai Hind Channel** Every Saturday 6 A.M. to 6:30 A.M.
Magazine (Bi-Monthly)	:	Bible Truth (Monthly) & Truth for Today

For more information and Bible Corres. Course write to

Church of Christ, Tampuranmukku, Trivandrum - 695 035
Phone - 0471-2303378, Cell 94470 35465

.....

MANIPUR

T.V. Program : **Hombill Cable**, Channel No. 1
Sunday, Tuesday, Thursday, Saturday
6:00 P.M. to 7:00 P.M.
Speaker : Thang Lien (Cell : 08974460428)

.....

Tamil

GRACIOUS WORD

Philemon Rajah & Kingsly in Tamil:

Nambikkai TV : Every Tuesday 6:00 AM - 6:30 AM
Tamilan TV : Every Sunday 6:45 - 7:00 AM
Magazine : Kirubaiyulla Vaarthai (Monthly Tamil)
The Voice of Truth Intl. (English Qty.)
Bible Corress.Coures : Basic and Advanced Bible
Correspondence Courses (Tamil & English)
J. C. School of Evangelism : Training Faithful men and woman for Evangelism at their Place
Online Bible Course : www.graciousword.org (Tamil & English)

God's Word to the Visually Challenging People
- The Voice of Truth International Braile Edition
(Tamil & English. FREE)
- Braile Bible Lesson (Tamil & English. FREE)
- FREE MP3 Player Audio Bible for the Blind
(Different Languages. FREE)

For more information and Bible Courses, write to

P. C. Philemon rajah
P. O. Box 15, 45 C/1 Church Lane, Coronation Street
Arasardi, Madurai 625016
mobile: 9244204420, 9244214421 -
Kingsley, 0452-2607026 - landline

.....

SATHYA VAZHI

Speaker : P. R. Swamy (Evangelist) & Douglas
Radio Program : Sunday to Wednesday 5:30P.M. -5:45P.M.
(Srilanka All Asian Service 25 & 49 Meter Band)
Magazine : Sathya Vazhi (Tamil)
Programs : Bible School & Bible Corres. Courses

For More Information write to

"Sathy Vazhi" Post Box 8405, Bengaluru-560084
Phone- 080254 63507, Cell- 098440 70763
E-mail:-prsdoug@hotmail.com

THIRUMARAI AASAM (T. V. Program)

Speaker	:	Rajanayagam
Tamilan T. V.	:	Monday 07:00 A.M. - 07:15 A.M Thursday 9:30 P.M. -10:00 P.M. & Saturday 7:15 A.M. - 07:30 P.M.
Magazine	:	Thirumarai Assam (Monthly)
Tamil Qrtly Magazine	:	"Sathiyathin Kural" (TVOTI - Tamil)

Advanced Bible Correspondence course avaibale nt Tamil

For more information write to

Church of Christ, Post Box 27, Dharampuram Road
Kangeyam 636 701, Cell 98427 30328

THE WORD OF CHRIST (T. V. Program)

Speaker	:	B. Arjunan
Nambikkai TV	:	Monday 7:30 A.M. - 7:45 A.M. & Saturday 7:30 A.M. - 7:45 A.M
Magazine	:	The word of Christ (Monthly)
Radio Program	:	SW 25 & 49 M (Saturday 5:30 to 5:45 P.M.)

(Srilanka All Asia Service)

For More Information write to

The Word of Christ, Post Box 5, Batlagundu - 624 206
Dindigul Distt., Cell 94435 58041

.....

TELUGU

SATYAVANI

Speakers	:	Joshua & Ricky Gootam
Subhavartha Channel:		Sunday 6:00 P.M.
Rakshana Channel	**:**	Wednesday 6:30 P.M. Thursday 11:00 A.M.

Satyavani T. V. Online: www.sakthitv.in
Every Wednesday & Friday at 8:00 P.M.
Everyday at 7:30 AM and 3:30 PM on Kanthi TV in A. P. only

For More Information & Bible course write to

Post Box 80, Kakinada, Andhra pardesh - 533 001
Cell- 088423 63722 E-mail: jgootam@yahoo.com

वॉयस ऑफ़ ट्रुथ

मंगवाने हेतु फॉर्म

(कृपया इस फॉर्म को भर कर नीचे दिए गए पते पर भेज दें)

☐ मैं वॉयस ऑफ़ ट्रुथ (हिन्दी/अंग्रेज़ी) डाक द्वारा अपने/अपने मित्र ..... के लिए मंगवाना चाहता/चाहती हूं। मैं चार अंकों का चंदा ₹100/– चेक/मनी ऑर्डर भेज रहा/रही हूं। पता नीचे दिया गया है।

☐ मैं अपनी मण्डली के लोगों के लिए वॉयस ऑफ़ ट्रुथ (हिन्दी) की 25 प्रतियों का चंदा ₹500 भेज रहा/रही हूं। कृपया नीचे दिए पते पर भेजने का कष्ट करें।

☐ मैं घर बैठे डाक द्वारा हिंदी/अंग्रेज़ी भाषा में बाइबल कोर्स करना चाहता/चाहती हूं। कृपया नीचे दिए पते पर डाक के द्वारा बाइबल कोर्स भेजें।

धन्यवाद

चैक/मनी ऑर्डर **EARNEST GILL** के नाम
से इस पते पर भेज दें
Bro. Earnest Gill
5802 B, Sector, 38-WEST
CHANDIGARH-160014

Name : Mr./Mrs .....

Father/Husband's Name : .....

House No.: ..... St. No. /Mohalla:.....

Vill. & Post Office : .....

Tal/Teh. : ..... Distt. : .....

STATE .....PIN: ☐☐☐☐☐☐

MOBILE No. : ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐